नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन का प्रकाशन न०-14

इस्लामी अक़ीदे भाग-1

ख़ुदा का विश्वास

लेखक

आयतुल्लाह सैयद मुजतबा मूसवी लारी

हिन्दी रूप

तज़्हीब नगरौरी

सम्पादन

मु० र० आबिद

प्रकाशक

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, चौक, लखनऊ-3

0522-2252230 - 09335276180

किताब का नाम	इस्लामी अक़ीदे (भाग-1)
लेखक	आयतुल्लाह सैयद मुजतबा मूसवी लारी
सम्पादन	मु० र० आबिद
हिन्दी रूप	तज़्हीब नगरौरी
कम्पोज़िंग	आइडियल कम्प्युटर्स प्वाइन्ट, लखनऊ-3 (09935025599)
प्रकाशन मात्रा	2000
प्रकाशन वर्ष	जनवरी 2009
मुद्रक	निज़ामी प्रेस, लखनऊ
प्रकाशक	नूरे हिदायत फाउण्डेशन, लखनऊ

मिलने का पता

नूरे हिदायत बुकडिपो

इमामबाड़ा ग़ुफ़रान मआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड,

चौक, लखनऊ-226003 (उ० प्र०) भारत

फोन न० 0522-2252230

मोबाइल 09335276180

क्या? ⇒⇒⇒ कहाँ

[i] प्रकाशक की मेज़ से I
[ii] पैग़ाम अनिल मिश्रा (I.A.S. भारत सरकार) II
[iii] समझ की पहल III
[iv] अपनी बात VI
[v] लेखक द्वारा पहले फ़ारसी एडिशन की प्रस्तावना IX

ख़ुदा की पहचान पर चर्चा

1— ख़ुदा की पहचान 1
2— ख़ुदा की खोजः वजूद की गहराइयों से पुकार 13
3— खोजने और पहचानने का एहसास 24
4— ख़ुदा और प्रयोग वाले ज्ञान (साइंस) का तर्क 31
5— अनदेखे 'होने' को मानना 43
6— कारणता (कारण—नतीजे) का नियम 54
7— जीवन मौलिकता का सिद्धान्त 59
8— नेचर में ख़ुदा के जलवे 63
9— मैटर और 'होने' के नियम 67
10— आपसी बैलेन्स 70
11— मेडिकल साइंस का कमाल 73
12— नेचर का महीनपन 75
13— परम्शक्ति को मानना 79
14— ख़ुदा को कारण की ज़रूरत नहीं 82
15— हर चीज़ को कारण की ज़रूरत है 85
16— कारणों की ज़ंजीर कहाँ तक 87
17— संसार सदा से नहीं है, सदा तक नहीं है 90
18— इंसान की बेबसी का पिंजड़ा 95
19— नक़ली साइंस की धोकेबाज़ी 98
20— विश्वास न होने की वजहें 105
21— ख़ुदा के ख़ास गुण और ख़ुसूसियतें 121
22— आदर्श (Ideal) ख़ुदा की शर्तें 131
23— दुआ शुक्र (करने वालों) की बेहतरीन पहचान है 136
24— ख़ुदा के गुण अटकल वाले नहीं हैं 140
25— ख़ुदा का एक अकेला होना 147
26— ख़ुदा की बेहद सकत 157
27— ख़ुदा का इल्म (जानना) 167

ख़ुदा के न्याय की चर्चा

28— ख़ुदा के न्याय पर कुछ विचार 175
29— संसार पर बुराई और बिगाड़ का राज क्यों? 183
30— दुख जगाने और चलाने के कारण हैं 192
31— बराबरी का न होना 201

आज़ादी और बेबसी की बात

32— असल टापिक पर एक नज़र 211
33— 'बेबसी' के मानने वाले लोग 214
34— 'आज़ादी और चुनाव' मानने वाले 231
35— बीच की बात 238
36— बीच का मज़हब 243

भाग्य का मसला

37— क़ज़ा और क़द्र 251
38— क़ज़ा और क़द्र का ग़लत मतलब 263

प्रकाशक की मेज़ से

आज अपनी चौदहवीं भेंट आपकी ख़ास मज़हबी रूचि और ज्ञान की ललक के हवाले करते हुए हमें ख़ुशी है।

यह मशहूर धर्मगुरु बुज़ुर्ग आलिम और महान लेखक आयतुल्लाह सैयद मुजतबा मूसवी लारी की (4 हिस्सों की) मूल फ़ारसी रचना 'इस्लाम के बुनियादी अक़ीदे' (मूल विश्वास) के पहले हिस्से का हिन्दी रूप है। इसमें इस्लाम के एकेश्वरवादी विचार में ख़ुदा, उसके गुण और उसके ख़ास गुण न्याय/इन्साफ को आज के ज्ञान, फिलासफी, लॉजिक और साइंस की भाषा में ऐसे ख़ूबसूरत तरीक़े से पेश किया गया है जो उन्हीं के क़लम का कमाल है। मूल रचना हाथों हाथ ली गई, वैसे ही उसके अरबी, उर्दू और अंग्रेज़ी समेत कई भाषाओं में अनुवाद। हिन्दी अनुवाद के लिए हमारे पूज्य आलिम, विचारक व शिक्षाविद 'मुफ़क्किरे इस्लाम' मौलाना (डॉ०) कल्बे सादिक़ साहब की पहल पर विद्वान लेखक ने उन्हीं को इस अनुवाद का ज़िम्मा और छापने के हक़ प्रदान कर दिये। डॉ० साहब ने 'नूरे हिदायत फाउण्डेशन' पर भरोसा करते हुए हमे अनुवाद और प्रकाशन की ज़िम्मेदारी सौंपी। हमने अपने भर भरसक कोशिश की कि यह काम अच्छे से अच्छे ढंग से हो। इससे कुछ देर ज़रूर हुई जिसके लिए हमें दिल से खेद है। ख़ैर अब अलहम्दुलिल्लाह हम इसे आपको पेश करने की पोज़ीशन में आ गये। आशा है यह आपकी आशाओं और डॉ० साहब के भरोसे पर अगर पूरा न उतरे तो कम से कम उसे ठेस न पहुँचाए। आगे आप से आशा करते हैं कि इस किताब के बारे में अपने अनमोल विचार और सुझावों से हमें ज़रूर आभारी करेंगे।

मालिक से मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] के सदक़े में दुआ है कि हमारी यह पेशकश किताब– दुनिया में भला, उचित और वेलकम योगदान साबित हो और हमें ज्ञान-सेवा की ज़्यादा से ज़्यादा इबादत की तौफ़ीक़ हो।

सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी
नूरे हिदायत फाउण्डेशन
[सम्पादक मासिक "शुआ-ए-अमल" लखनऊ]

जनवरी-2009

सत्यमेव जयते

ANIL MISRA, IAS

Tel. : 695700
3017914

SECRETARY
to the Hon'ble Speaker, Lok Sabha
NEW DELHI

Dated 25.11.1991

Sayyed Mojtaba Musavi Lari,
Foundation of Islamic C.P.W
21 Entezam St., Qom, I.R. Iran

Dear Sir,

I thank you very much for your book "God and His Attributes"which I found extremely interesting. I will be grateful if you could send the rest of the serials regularly to me.

With best wishes,

Yours sincerely,

(Anil Misra)

समझ की पहल

अगर कुछ बातों को आँखें बन्द करके मान लेने और (कभी कभार) बन्धेटिके रीति रिवाजों पर चल लेने का नाम धर्म है, तो इस्लाम धर्म नहीं है। इस्लाम धर्म की इस परिभाषा पर पूरा नहीं उतरता। इस्लाम- कुछ नहीं, बहुत कुछ, वह भी खुले आँखों मानने और फिर इससे पैदा हुई सोच के सांचे में विश्वास भरे भरपूर खरे चलन का सटीक मेल है। इस्लाम चाहता है कि धर्म के नाम पर जो कुछ भी जो माने, सोच समझ कर, अक़्ल की कसौटी पर परख कर, बहुत ही ठोक बजाकर, ऐसे जाने बूझे को खुले मन से माने (बद्धुओं की तरह यूँ ही नहीं, बुद्धिमानों की तरह माने, फिर अपने छुट्टा मन की न माने, आगे आपकी मनमानी भी न करे), मस्तिष्क को मन के ऊपर रखकर माने। जो यह कहा जाता हैः

Religion begins where reason ends.

(जहाँ समझ दम तोड़ दे, वहाँ से धर्म शुरु होता है)

इस साँचे को भी इस्लाम तोड़ देता है। इस्लाम तो समझ को पूरा-पूरा बढ़ावा देता है और समझ भरे सोच विचार को भरपूर सकत देता है। वह तगड़ी बढ़ी समझ से अपनी मनवाना चाहता है। वह बुद्धुओं से मनवाना नहीं चाहता, बुद्धुओं पागलों से बात भी करना नहीं चाहता (यहाँ उनकी बात नहीं जो बने हुए या बनाये हुए बुद्धु नहीं हैं या जो अपना बुद्धूपन को छोड़कर समझ के साथ हो सकते हैं), इस्लाम बुद्धिमानों और बुद्धजीवियों से ही बोलता है, सोच समझ की मनवाना चाहता है। इस्लाम के ग्रन्थ क़ुरआन ने कई तरह इस बुद्धि से बात की है, सूझबूझ वालों को पुकारा है (उन्हे अपने पुकारने के क़ाबिल समझा) उन्हीं से ध्यान करते रहने को कहा है। नासमझों के चुटकियाँ भी ली हैं और आख़िर आख़िर सूझबूझ से पैदल लोगों को बुरी तरह फटकारा लताड़ा तक है।

हाँ, इस्लाम वहाँ समझ भिड़ाने, अक़्ल लड़ाने को नहीं कहताः जब यह समझ लिया कि भगवान है, कैसा है, जान लिया कि उसकी मानना चाहिए, फिर यह भी जान लिया कि उसकी क्या है, तो आँख मूँद कर उसकी बात पर चलना है क्योंकि Order is Order (हुक्म, हुक्म है), अनुशासन (Discipline) की बात है। उसके आदेशों के आगे अपनी-अपनी नहीं करना है। उसके हुक्मों पर चलना है, उसके आदेशों को पूरा करना है बस। उसकी बात पर चलने के लिए उसके आर्डर पर क्यों कैसे नहीं करना है। हाँ, उसकी बात पर चलते हुए, उसके हुक्म के पीछे रही समझ पर सोच विचार कर कुछ समझ लेने से रोका भी नहीं गया है, बस यह ध्यान रहे कि जो थोड़ा बहुत हम समझ पायें उसको उसकी समझ ही न समझ लें।

यह समझ को ऊँचा रखने की बात ही है कि इस्लामी धर्मशास्त्र को भरपूर 'सोच समझ', तर्क, और फ़िलासफ़ी के ढंग में साइंसी तरह से जमा कर साफ़ सटीक सजीले रूप में पेश करते रहने की अपनी लम्बी और गहरी परम्परा रही है। (किसी दूसरे मज़हब के पास शायद ही ऐसी परम्परा रही हो)। इस्लामी शस्त्रों में एक ख़ास विधा (Speciality) 'इल्मुल कलाम' (वाक्-शास्त्र) का बड़ा विकास हुआ। इसमें धर्म के विश्वासों को सोच विचार की, समझ, फ़िलासफ़ी और तर्क (Logic) वाली दलीलों से बताने और समझाने की कोशिश होती रही।

ज्ञान विज्ञान और तकनीक के लगातार विकास के साथ समाज की बदलती हुई सोच और मान्सिकता के सामने विश्वासों को पेश करने में शोध बढ़ता रहा और उसे नये-नये आयाम मिलते रहे। ऐसे ही प्रयासों में एक नयी और अछूते ढंग की कोशिश आज के परमपूज्य प्रसिद्ध धर्मगुरु, महान विद्वान विचारक, लेखक हज़रत आयतुल्लाह (प्रभु-प्रतीक) मौलाना (स्वामी) सय्यद मुजतबा मूसवी लारी के मंझे चमत्कारी क़लम की सराहनीय फ़ारसी रचना 'इस्लाम धर्म-विश्वास के मूल' (4 भागों में) के रूप में सामने आई। इसका पहला भाग ईश्वर के गुण (एकेश्वरवाद और ईश्वर का न्याय) के बारे में है, इस भाग का हिन्दी रूप आपके सामने है।

मूल रचना बेझिझक अपने विषय की अनूठी कही जा सकती है। नई पढ़ी-लिखी पीढ़ी की मान्सिकता का पास रखने वाली इस रचना में इस्लाम के ख़ास-ख़ास विश्वासों को आधुनिक फ़िलासफ़ी, लॉजिक, साइंस और दूसरी विधाओं का फ़ायदा उठाते हुए, ज्ञान के होनहार लहजे में जमा किया गया है। इस तरह ये ज्ञान विज्ञान का एक संगम है। एक ही विषय की किसी रचना का अनुवाद यूँ भी कठिन होता है, फिर ऐसी रचना को दूसरी भाषा का रूप देना और भी कठिन हो जाता है। यह मेरे विद्वान दोस्त तज़हीब नगरौरी का दिल-गुर्दा था कि इस कड़े काम को बड़े अच्छे ढंग से कर दिखाया। विद्वान हिन्दी रूपकार और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, लखनऊ के प्रमुख धर्मविद मौलाना 'असीफ़' जायसी के आह्वान पर हिन्दी रूप की पान्डुलिपि देखी गई। इस सिलसिले में मुझ जैसे समझ और ज्ञान के दरिद्र ने अपने भर कुछ सुझाव भी दिये जो मान भी लिए गये। सबसे बड़ी कठिनाई यह आ पड़ी कि मूल फ़ारसी रचना के उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवादों के बीच बहुत अन्तर दिखाई दिया। इसका बड़ा कारण वही मूल रचना में अलग-अलग (Specialities) का समावेश है। ऐसा समावेश ज्ञान के बाज़ार में रचना का मोल चाहे जितना बढ़ा दे, पर आम जनमानस में संचार के रास्ते में बहुत बड़ी रुकावट बन जाता है। इसको देखते हुए हिन्दी रूप में कोशिश की गयी कि परिभाषिक शब्दों (Technical Terms) से जहाँ तक हो सके बचते हुए मूल लेखक की बात को आम सरल भाषा के सहारे सभी आम ख़ास तक पहुँचाया जा सके। आगे दुआ है कि हमारी कोशिशें सफ़ल हों।

अन्त में एक और बात कहने की आज्ञा चाहता हूँ। अस्ल किताब के लिखने और आज हिन्दी रूप देने में समय का बड़ा आ गया है। इस बीच एक नई पीढ़ी ने अपना होना दर्ज करा लिया है, फिर IT के दिये संचार इन्क़ेलाब ने 'सोच' को पूरी तरह बदल दिया है। ऐसे में मूल रचना को नये सिरे से ही बनाने (लिखने) की ज़रूरत है जिसे ऐसे बनाया जाए कि वह हिन्दी और हिन्दुस्तानी मिज़ाज को भी अपील कर सके।

मु० र० आबिद
गोलागंज, लखनऊ

अपनी बात

आयतुल्लाह सय्यद मुजतबा मूसवी लारी एक बड़े धर्मगुरु आयतुल्लाह सय्यद अली असग़र लारी के बेटे और आयतुल्लाह सय्यद अब्दुल हुसैन लारी के पोते हैं। उनके दादा ने ईरान के इन्क़ेलाब में योगदान दिया और अपने समय में ईरान के लारिस्तान प्रान्त में इस्लामी राज्य की स्थापना भी की जो कुछ दिनों तक चला भी। मुजतबा मूसवी लारी सन् 1935ई० में ईरान के शहर लार में पैदा हुए। उन्होंने वहीं अपनी शुरु की पढ़ाई करके 1953ई० में ईरान की धार्मिक ज्ञान-राजधानी क़ुम चले गये, वहाँ उन्होंने उच्च्य इस्लामी शिक्षा पायी और मुजतहिद (इस्लाम के धर्म-क़ानून में शोध करने वाले विद्वान) हुए।

उन्होंने मज़हबी साइंसी पत्रिका ''मकतबे इस्लाम'' में लिखना भी शुरु किया। बाद में उनके ये लेख किताब ''नैतिक व मान्सिक समस्याएं'' के रूप में प्रकाशित हुए। 1963ई० में वे इलाज के सिलसिले में कुछ महीने जर्मनी में रहे। उसी बीच उन्होंने एक किताब ''पश्चिमी सभ्यता का चेहरा'' लिखी जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद एक अंग्रेज़ विद्वान F.G. GOULDING ने Western Civilisation Through Muslim Eyes के नाम से किया जिसने यूरोप के लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। इस विषय पर यूरोप की पत्रिकाओं में लेख भी छपे और B.B.C. ने अनुवादक का इण्टरव्यु लिया। अंग्रेज़ी अनुवाद के छपने के तीन साल बाद एक जर्मन प्रोफ़ेसर RUDOLF SINGLER ने जर्मन भाषा में अनुवाद किया। इस किताब का उर्दू अनुवाद मौलाना रौशन अली साहब ने मग़रिबी तमद्दुन की एक झलक के नाम से किया।

उनकी एक पुस्तिका 'तौहीद' (एकेश्वरवाद/Divine Unity) का भी अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ जिसका हिन्दी अनुवाद बाद में 'ईश्वर का

जानना' के नाम से छपा।

1964ई० में उन्होंने लार में एक संस्था बनाई जिसका उद्देश इस्लाम का प्रचार करना, गावों के जवानों को इस्लाम सिखाना और ग़रीबों की मदद करना था। बाद में 1980ई० में आपने क़ुम में भी एक संस्था ''विदेश में इस्लामी प्रचार-प्रचार का दफ़्तर'' बनाई जो बहुत ही सक्रिय है और अलग-अलग ज़बानों में क़ुरआन और इस्लाम धर्म की दूसरी किताबों का प्रकाशन करके धार्मिक संस्थाओं और लाइब्रेरियों को मुफ़्त भी बाटता है।

1974ई० में इस्लामी सदाचार पर लेख किताब ''मानव विकास में सदाचार का योगदान'' के रूप में भी छपे।

1978ई० में अमेरिका, इंग्लैण्ड और फ्रांस का सफ़र किया। ईरान वापस आने पर इस्लामी विचारधारा पर लेखों का सिलसिला ''सरोश'' पत्रिका में निकाला जो जमा होकर चार भागों की किताब 'इस्लामी विचारधारा के आधार' के रूप में छपे।

यह किताब प्रसिद्ध धर्मगुरु आयतुल्लाह सय्यद मुजतबा मूसवी लारी की चार भागों पर आधारित वह रचना है जिसका अनुवाद फ़ारसी ज़बान से अरबी, अंग्रेज़ी, फ्रेन्च, जर्मन और उर्दू ज़बानों में बहुत समय पहले हो चुका था और छप भी चुका था। किताब में बहुत आसान और साइन्टिफिक तरीक़े से इस्लाम धर्म के मूल सिद्धान्तों का विवरण है। चूँकि हिन्दुस्तान के लोगों में उर्दू बोली और समझी तो जा रही है लेकिन उर्दू लिट्रेचर पढ़ने वालों की संख्या समझने और बोलने वालों के मुक़ाबले में कम है, इसलिए ''नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन'' ने इस किताब को हिन्दी रूप देकर छापने की ज़रूरत महसूस की और यह काम मेरे ज़िम्मे किया गया।

इस किताब के उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवादों से भरपूर फ़ायदा उठाते हुए इसको हिन्दी का रूप दिया गया है। यह हिन्दी रूप आपके हाथों में है। उम्मीद है कि जल्दी ही इसके अगले तीन भाग भी प्रकाशित हो जायेंगे।

जबकि मुझे अपनी कमियों का एहसास है लेकिन मु० र० आबिद साहब और पूज्य भाई ''तनवीर नगरौरी'' साहब के सहयोग के भरोसे काम

की शुरुआत की और तनवीर नगरौरी साहब के भरपूर सहयोग के बाद जब तर्जुमा पूरा हो गया तब पूरी किताब जनाब मु० र० आबिद साहब को दी गयी। मुझे इस बात का भी पूरा-पूरा एहसास है कि अपनी तरह रचना या तर्जुमे से कहीं ज़्यादा कठिन काम सुधार के लिए किसी किताब का देखना होता है। शायद किताब के प्रकाशन में होने वाली देर का कारण भी यही बात है।

बहरहाल किताब हाज़िर है पाठकों से विनती है कि किताब को हिन्दी रूप देने में जो गलतियाँ रह गयी हों वह हमें ज़रूर बतायें ताकि अगले एडीशन में उनको सुधारा जा सके। आख़िर में दुआ है कि मुहम्मदस० व आले मुहम्मदअ० के सदक़े में किताब के लेखक को अधिक से अधिक लिखने और धर्म-सेवा की तौफ़ीक़ हो और पाठकगण इससे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठायें ताकि हर वक़्त और जगह उन्हें ख़ुदा के सही जलवे नज़र आयें जो इस किताब का अस्ल उद्देश्य है।

तज़हीब नगरौरी
नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

लेखक द्वारा पहले फ़ारसी एडीशन की प्रस्तावना

मन और बुद्धि का खोखलापन आदमी को सच्चाई की समझ से अपराध के भंवर की ओर घसीटता चला जा रहा है। आज हम देखते हैं कि आदमी की बहुत सी रचनात्मक ताक़तें भटक रही हैं क्योंकि वह धर्म के बनाये विचार और कल्चर के भरेपुरे ठांठे मारते समन्दर की तरफ़ से अपनी आँखें बन्द कर लेता है, मानो उसने आज के संसार की विचारधाराओं को अपने बुद्धिजीवी जीवन के मार डालने की खुली छूट दे रखी है।

हमारे समय की घबराई हुई प्यासी पीढ़ी के सामने आज बहुत से विचार लाये जाते हैं जो सिमटी सूझबूझ के फिलासफ़रों और विद्वानों की जल्दबाज़ी की और रोगी सोच से निकलते हैं। ये विचार आज की पीढ़ी की ज़रूरत के जवाब का झूठा बहाना तो हो सकते हैं पर वे जीवन के किसी माने या मक़सद को नहीं सुझाते हैं।

इन विचारों के पीछे जो ''मुर्ग़े की एक टाँग'' वाली सोच का ढंग है वह आज के सेन्सटिव मनों के पनपने के लिए ठीक नहीं है, फिर ऐसे में जहाँ अभी भी जीवन पर समझ और तर्क (Logic) की पकड़ है, इस सोच की तरफ़ कुछ भी ध्यान देना न चाहिए।

इसमें शक नहीं कि बहुत सी नाबराबरियाँ, अत्याचार, बेदर्दियाँ और बेढंगियाँ जो इतिहास में लगातार देखी जा सकती हैं, वे दुनिया और आदमी के जीवन में छाये विरोधों से पैदा हुई हैं।

हमारा मानना है कि इस्लाम और तौहीद (एकेश्वरवाद) के आधार वाली उसकी विचारधारा जिसके पास असली दुनिया, मैटर के संसार और बाहरी सच्चाई की ठोस फ़िलासफ़ी वाली और साइन्सी एनालिसिस (Analysis) और गहराई से समझ का एक लम्बा चौड़ा सिलसिला है, और आदमी से उसके अस्तित्व ('होने') के सारे आयामों (Dimensions) की पहचान कराती

है, वही इस्लाम सारे विरोधों और नाबराबरियों को जड़ से हल करने की सकत रखता है और इन्सान के कल को बनाने के लिए उसे टिकने वाले काम का रास्ता दिखा सकता है।

विश्वास के हर तरीक़े को, चाहे उसके उसूल जितने भी आम क्यों न हों और उसके आधार हमेशा वाले क्यों न हों, उसे हर पीढ़ी के लिए समय के लेहाज़ से नई तरह से पेश करना और बताना चाहिए। इसलिए समय के मिज़ाज को समझने वाले और आज की फ़िलासफ़ी और साइन्स के आविष्कारों का सामना करने के लिए बुनियादी बातों में ज़्यादा रिसर्च और खोजबीन की ज़रूरत महसूस करने वाले विचारकों और धर्म के रूहानी रखवाले उलमा को इस्लामी स्रोतों (Source) के उपयोग से इन मसलों पर समझ और होश से ख़ास और गहरा ध्यान देना चाहिए। उन्हें सच को वैसे पेश करना चाहिए जैसे इस्लाम की तरक़्क़ी वाली खुली आत्मा चाहती है और दुनिया को इस्लाम के बुद्धजीवी (Intellectual) उसूल पहचनवाना चाहिए।

यह किताब सीधे सादे शब्दों में फ़िलासफ़ी वाले तर्क के साथ इस्लामी विशवास के आधारों को थोड़े में पर जीते जागते ढंग से पेश करने की कोशिश है। हमारा मक़सद कुछ सारांश में ही पेश करना है, इसलिए हमने बहुत सारे फ़िलासफ़रों और साइन्टिस्टों के मतों को ज़्यादा विस्तार से देने से अपने आप को रोके रखा।

इसका पहला हिस्सा ख़ुदा के एक होने और उसके न्याय के बारे में है (यह किताब इसी हिस्से का हिन्दी रूप है)।

हमें आशा है इन बुनियादी मसलों पर इस्लाम के विचार समझाने में यह एक योगदान होगा।

सैयिद मुजतबा मूसवी लारी

कुम, (ईरान)

15 जुलाई 1981ई० (24 तीर 1360 हि०सौ०)